अखिल भारतीय आयुर्वेद महासम्मेलन एवं गुजरात प्रदेश आयुर्वेद सम्मेलन के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित "आयुर्वेद पर्व-आयुष इण्डिया एक्स्पो-2017" के समापन समारोह में गुजरात के माननीय राज्यपाल श्री ओ. पी. कोहलीजी का संबोधन। (दिनांक : २४ दिसंबर, २०१७)

- अखिल भारतीय आयुर्वेद महासम्मेलन और आयुष के तत्वावधान में आयोजित इस समारोह में आप सभी के बीच सम्मिलित होने का मुझे अवसर प्रदान किया गया है, इसकी मुझे प्रसन्नता है। इसके लिये मैं आयोजकों के प्रति अपना आभार व्यक्त करता हूँ।
- आयुर्वेद भारत के चिकित्सा जगत को एक महान देन है। प्राचीनकाल में केवल अपने देश में ही नहीं बल्कि सारे एशिया में आयुर्वेद के माध्यम से रोगियों की चिकित्सा की जाती थी तथा लोगों को स्वास्थ्य लाभ मिलता था। प्राचीन समय में तक्षशिला विश्वविद्यालय में आयुर्वेद की शिक्षा दी जाती थी जहां दुनिया भर से छात्र आकर अध्ययन करते थे। पाटलीपुत्र के प्रसिद्ध चिकित्सक आचार्य जीवक ने भी तक्षशिला से ही आयुर्वेद की शिक्षा प्राप्त की थी। उन्हें भगवान बुद्ध की चिकित्सा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। नालंदा में भी प्राचीन विश्वविद्यालय था जिसमें आयुर्वेद की शिक्षा दी जाती थी। वहाँ एक वृहद चिकित्सालय भी था जिसमें कठिन रोगों की चिकित्सा के लिये दूर-दूर से लोग आते थे। कई चीनी यात्रियोंने अपने यात्रा प्रवास में भी इसका उल्लेख किया हुआ है। इसी तरह विक्रम शिला, काशी, उज्जैन, राजस्थान में भी आयुर्वेद की शिक्षा की व्यवस्था थी। देश की पराधीनता के कारण आयुर्वेद की शिक्षा एवं चिकित्सा पर रोक लगी और इन संस्थानों में संशोधन कार्य धीमा पड़ गया या बंद हो गया।
- प्रसन्नता की बात है की देश की स्वतंत्रता के बाद यद्यपि एलोपैथी को ही प्रधान चिकित्सा का दर्जा दिया गया है फिर भी आयुर्वेद को भी मान्यता देकर उसके विकास के लिये प्रयास प्रारंभ हुये है। गुजरात राज्य को भी आयुर्वेद के क्षेत्र में प्रथम स्थान प्राप्त करने का अवसर मिला है। 1952 में

जामनगर में पहला शोध संस्थान स्थापित किया गया था, जिसमें अनेक प्रकार के शोध कार्यक्रम हुये और आयुर्वेद में शोध की दिशा क्या होगी इस पर भी मंथन किया गया और निर्णय लिये गये। नवानगर राज्य जिसकी राजधानी जामनगर थी वहाँ के प्रधान चिकित्सा अधिकारी डॉ. प्राण जीवन महेता का इस शोध संस्थान की स्थापना में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। राज्य सरकार के द्वारा भी कई आयुर्वेद केन्द्र और चिकित्सालय स्थापित किये गये है। अहमदाबाद का सार्वजनिक आयुर्वेद महाविद्यालय देश के प्रमुख आयुर्वेद महाविद्यालयों में से एक है जहाँ पर आयुर्वेद की स्नातक तथा स्नात्तकोतर स्तर की शिक्षा दी जाती है। अहमदाबाद में ही पंचकर्म का लाभ जन-जन तक पहुंचाने के लिये राज्य सरकार के द्वारा मणीबहेन आयुर्वेद चिकित्सालय की स्थापना की गई है, जो पंचकर्म चिकित्सा के क्षेत्र में एक अग्रणीय संस्थान माना जाता है। यहाँ आयुर्वेद के स्नातको को पंचकर्म की शिक्षा भी दी जाती है। भारत सरकार के राष्ट्रीय आयुर्वेद विद्यापीठने चिकित्सकों के प्रशिक्षण के लिये संस्थान के रूप में इसे मान्यता दी है।

- यह बड़ी प्रसन्नता का विषय है कि देश में आयुर्वेद को प्रचारित और प्रसारित करने के लिये भारत सरकारने आयुर्वेद की योजना बनाई है। मुझे यह जानकर भी प्रसन्नता हुई है कि अखिल भारतीय आयुर्वेद के महासम्मेलन के माध्यम से अभी तक हमारे देश में दिल्ली, नागपुर तथा पटियाला में आयुर्वेद पर्व धूम-धाम से मनाया जा चुका है। अहमदाबाद में संपन्न हो रहा यह चौथा आयुर्वेद पर्व है। इसी क्रम में बेंगलोर और पटना में भी द्वितीय वर्ष में आयुर्वेद पर्व आयोजित किये जाएंगे और आगे भी विभिन्न राज्यों में आयुर्वेद पर्व की शृंखला चलती रहेगी।
- आयुर्वेद एक महान चिकित्सा पद्धति है जिसमें मनुष्य को 100 वर्षो तक स्वस्थ जीवन जीने का ज्ञान तथा मार्गदर्शन दिया गया है। मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि इस आयुर्वेद पर्व में अहमदाबाद और गुजरात के अन्य क्षेत्रो से बड़ी संख्या में उपस्थित होकर लोग आयुर्वेद से स्वस्थ रहने तथा मधुमेह, उच्च रक्तचाप आदि बीमारियों से बचने के उपायों की जानकारी प्राप्त कर रहे हैं।

- यहाँ आयुर्वेद के विद्वानों तथा अध्यापकों का सम्मेलन भी हुआ है। मेरा विश्वास है कि इन विद्वानों द्वारा आयुर्वेद चिकित्सा और अनुसंधान तथा शिक्षा के बारे में गहराई से विचार मंथन हुआ होगा। यह मंथन आयुर्वेद चिकित्सा के विकास में महत्वपूर्ण सिद्ध होगा।
- हमारे प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी योग और आयुर्वेद चिकित्सा में विश्वास रखते है तथा इसकी उन्नति भी चाहते है। आपको ज्ञात होगा की प्रतिवर्ष 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर योग दिवस मनाया जाता है जिसे दुनिया के 180 से अधिक देशों ने अपने-अपने देश में मान्यता दी है और योग का कार्यक्रम प्रारंभ किया है। संयुक्त राष्ट्रसंघ ने भी योग के माध्यम से शरीर और मन को स्वस्थ रखने की प्रक्रिया को अत्यंत उपयोगी माना है। इसी क्रम में भारत सरकारने प्रति वर्ष धनवंतरी जयंती के शुभ दिन पर आयुर्वेद दिवस मनाने का निर्णय किया है तथा पिछले दो वर्षो से भारत सरकार इसका आयोजन कर रही है।
- इस वर्ष 17 नवंबर को भारत सरकार द्वारा दिल्ली के अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान में यह दिवस मनाया गया है। हमारे प्रधानमंत्रीजी ने राष्ट्रीय कार्यक्रम का उदघाटन किया था।
- इस अवसर पर यहाँ उपस्थित सभी आयुर्वेदज्ञों से में कहना चाहूंगा की आयुर्वेद में पूर्ण निष्ठा रखकर उसके माध्यम से लोगों के कल्याण में वे सतत प्रवृत्त रहे। मैं आशा करता हूँ की आयुर्वेद की शिक्षा में परिवर्तन करके ऐसी प्रणालि स्थापित की जाये जिसमें सैद्धान्तिक ज्ञान के साथ-साथ व्यावहारिक ज्ञान भी प्रचुर रूप से दिया जा सके, जिससे आयुर्वेद के माध्यम से देश तथा दुनिया के रोग पीड़ित मानवों की सेवा हो सके।
- मैं आयोजकों का धन्यवाद देता हूँ कि उन्होंने मानव कल्याण के लिये इस महत्वपूर्ण आयुर्वेद पर्व का आयोजन किया है। हमारे देश में ज्ञान की परंपरा बहुत समृद्ध रही है तथा ज्ञान के विविध क्षेत्रो में

हमारा देश शिखर पर रहा है। इसी परंपरा में आयुर्वेद के क्षेत्र में भी नवीनीकरण की जरूरत है, जो इस क्षेत्र में उचित शोध कार्यो से संपन्न हो सकती है।

- आज हम विज्ञान और टेक्नोलोजी के युग में जीते है। ऐसे समय में आयुर्वेद की परंपराओं को और कैसे उन्नत किया जा सकता है तथा बढ़ाया जा सकता है इसका विचार हमें करना पड़ेगा। पुरानी परंपराओं को आगे बढ़ाते हुये आधुनिकता के साथ उसका समन्वय करना होगा। यही हमारे लिये कल्याणकारी मार्ग हो सकता है। आज के बहुत से रोग हमारी गलत तथा विकृत जीवनशैली के परिणाम है। आयुर्वेद हमें स्वस्थ, सरल तथा सकारात्मक जीवनशैली क्या होती है, इसके बारे में भी बताता है। आयुर्वेद में बताई गई जीवनशैली एक बहुत बड़ा राहत का काम कर सकती है।
- आज के युग में आवश्यकता इस बात की है हम समाज में आयुर्वेद के संबंध में जानकारियों को बढ़ाये। इसके लिये मेरा सुझाव यह है की सफलता की कहानियाँ, वैद्यों तथा चिकित्सको को पूछी जाये तथा लिखाई जाये और इन सक्सेस स्टोरीझ का व्यापक स्तर पर प्रचार किया जाये।
- आज के युग में आयुर्वेद और भी प्रासंगिक होता जा रहा है। जितनी ही हमारी जीवनशैली विकृत होती जायेगी उतनी ही आयुर्वेद की प्रासंगिकता बढ़ती जायेगी। हमारा देश एकात्मक दृष्टि वाला देश है। इसका आउटलुक और नज़रिया एकात्म यानि की समग्र है और आयुर्वेद भी इसी समग्रता पर आधारित जीवनशैली का समर्थन करता है। जब हमारे देश में अंग्रेजों का शासन था तब आपको याद होगा कि स्वदेशी आंदोलन चलाया गया था। यह आंदोलन केवल राजनैतिक आंदोलन नहीं था मगर सर्व व्यापी आंदोलन था। शिक्षा, अर्थव्यवस्था, चिकित्सा इत्यादि प्रत्येक क्षेत्र में स्वदेशी पन को अपनाने की बात मुख्य थी।
- आयुर्वेद, योग, प्राणायाम, नैचुरोपैथी, पंचकर्म की शरण में रोगी राहत पाने के लिये जाता है। ऐसी स्थिति में एलोपैथी या होमियोपैथी चिकित्सा पद्धति से टकराने की कोई आवश्यकता नहीं। आवश्यकता इस बात की है कि विभिन्न चिकित्सा पद्धतियाँ एक-दूसरे की पूरक बने और विभिन्न

पद्धतियों में जो कुछ भी ग्रहण करने योग्य चीजे है उसका संकलन करके एक समग्र चिकित्सा पद्धति विकसित किया की जाये।

- आज हम देखते है कि चारो तरफ ऐलोपैथी की जबरदस्त मार्केटिंग हो रही है जितनी मार्केटिंग ऐलोपैथी की होती है उतनी किसी और चिकित्सा पद्धति की नहीं होती। आवश्यकता इस बात की है की यदि हम अपने देश में आयुर्वेद को बढ़ावा देने चाहते है तो हम सरकारी तथा गैर-सरकारी स्तर पर आयुर्वेद की जबरदस्त मार्केटिंग करे।
- मुझे विश्वास है कि आयुर्वेद पर्व में भाग लेने के लिये जो महानुभाव आज यहाँ उपस्थित है उन्होंने इन सभी बातों का विचार किया होगा। मैं आयोजकों का बहुत-बहुत आभारी हूँ कि उन्होंने मुझे यहाँ आकर आप सभी लोगों के दर्शन करने का तथा आपसे भेंट करने का अवसर दिया।

बहुत-बहुत धन्यवाद।